(1)

[This question paper contains 4 printed pages.]

09/5/18

Your Roll No............

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Sr. No. of Question Paper : 4244 **HC**

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **BA (H) HINDI – CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. निम्नलिखित गद्यांशों के सन्दर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) कहते हैं कि कल्पना ही कवि का कार्य-क्षेत्र है, सत्य नहीं; सौंदर्य है, ज्ञान नहीं; हृदय है, मस्तिष्क नहीं; भाव है, विवेक नहीं। भावों की यह प्रधानता सिर्फ काव्य में ही नहीं मानी जाती, किंतु सभी ललित-कलाओं में भावों का प्राधान्य माना जाता है। भावों के आविष्करण को कला कहते हैं। पर आप किसी भी कला को लीजिए। उसमें विशेषत्व प्राप्त

P.T.O.

करने के लिए एक विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है। जब तक उसका निर्दिष्ट ज्ञान नहीं होता तब तक उसमें सफलता प्राप्ति नहीं होती। ज्ञान के विकास से भावों का विकास होता है।

अथवा

हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में पहुँचकर साहित्य सृजन की प्रेरणा करती हैं। कवि या साहित्यकार में अनुभूति की जितनी तीव्रता होती है, उसकी रचना उतनी ही आकर्षक और ऊँचे दर्जे की होती है। जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो - जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।

(ख) विकासवाद का सिद्धान्त आजकल प्रायः सर्वस्वीकृत सिद्धान्त है। इस सृष्टि-प्रक्रिया को इस दृष्टि से देखने वाले को यह बात अत्यन्त स्पष्ट हो जायेगी कि मनुष्य के रूप में ही सृष्टि का सर्वोत्तम प्राणी विकसित हुआ है। मनुष्य-देह में ही मन और बुद्धि का - भावावेग और तर्क-मुक्ति के आश्रय इन्द्रिय-विशेष का - विकास हुआ है। यह संसार क्या है और कैसा है इसके जानने का एकमात्र साधन मनुष्य की बुद्धि है। हम जो कुछ समझ रहे हैं और जो कुछ समझ सकते हैं, सब मनुष्य का समझा हुआ सत्य है। मनुष्य-निरपेक्ष सत्य बात-की-बात है। इस जगत में जो कुछ सत्य है वह मनुष्य-दृष्टि में देखा हुआ सत्य है, अतएव मानव-सत्य है।

अथवा

इसमें संदेह नहीं कि सच्चे कलाकार का लक्ष्य सौंदर्य की सृष्टि ही रहता है, अपने भावों और विचारों का प्रसार नहीं। किंतु सौंदर्य कोई निरपेक्ष वस्तु नहीं है। उसका निर्माण भी तो कलाकार की अपनी भावनाओं और धारणाओं के आधार पर ही होता है। वास्तव में भावनाओं और धारणाओं का प्रचार तो आत्माभिव्यक्ति का अत्यंत स्थूल रूप है। उसका सूक्ष्म और उत्कृष्ट रूप तो सौंदर्य की सृष्टि ही है। कला की सृष्टि शून्य में नहीं हो सकती। उसके लिए कुछ-न-कुछ आधार चाहिए जिसे कलाविद मूर्त उपकरण का नाम देते आए हैं। और ये मूर्त उपकरण है क्या ? कलाकार का अपना भावबोध ही कला का मूल उपकरण है।

(ग) तुलसी के राम उनकी आशाओं के केन्द्र ही नहीं हैं, मनुष्य में वह जिन तमाम नैतिक गुणों को प्यार करते थे, वह उनके प्रतीक भी थे। ब्रह्मरूप में भले ही वह निर्गुण निर्विकार हों, मानव-रूप में वह किसी देश-काल की सीमाओं में गतिशील समाज के मानव का ही प्रतिबिम्ब हो सकते हैं। तुलसी के राम भारतीय जनता के नैतिक गुणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चरित्र में पितृभक्ति, भ्रातृप्रेम आदि पर बार-बार लिखा गया है लेकिन तुलसीदास का लक्ष्य परिवार में पिता के अधिकार की रक्षा करना न था। राम की मानवीय सहानुभूति माता, पिता, भाई, निषाद सभी के लिए है। विशेषता यह है कि जो जितना त्यागी है, निरूस्वार्थ है और दलित है, राम का प्रेम उसके लिए उतना ही अधिक है।

अथवा

गजाधर बाबू की वापसी पर किसी की आँख में आँसू नहीं। एक विषाद की छाया है जो क्रमशः गहरी होती जाती है। केवल दया नहीं, केवल सहानुभूति नहीं, बल्कि एक जीवन के प्रति एक गहरा पीड़ा-बोध। इस रिटायर्ड आदमी का अकेलापन जैसे अपरिहार्य है-अकेलेपन से निकलना चाहते हुए भी वह फिर उसी अकेलेपन में वापस जाने के लिए लाचार हो जाता है। और क्या यह अकेलापन एक गजाधर बाबू का ही है ? क्या ऐसा नहीं लगता कि यह अकेलापन बहुत व्यापक है - ऐसा अकेलापन जो कहीं न कहीं आज सबके अंदर मौजूद है परन्तु जिसका सहयोगी कोई निकटतर से निकटतर व्यक्ति भी नहीं हो सकता ?

2. हिन्दी आलोचना के विकास में भारतेन्दु एवं भारतेन्दु मंडल के योगदान की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था' पाठ के आधाार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि को स्पष्ट कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों के आधार पर जयशंकर प्रसाद **अथवा** हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि पर प्रकाश डालिए। (15)

4. 'कहानी : अच्छी और नयी' पाठ के आधार पर नामवर सिहँ की आलोचना-दृष्टि स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

दूसरे सप्तक की भूमिका के आधार पर अज्ञेय के विचारों को रेखांकित कीजिए।

(3000)

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19
9/5/18

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **4310** **HC**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi, CBCS-DSE**

Name of the Paper : भारतीय साहित्य पाठ परक अध्ययन

Semester : VI

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिये : 3×10=30

(क) क्रौंच के इस मुग्ध जोड़े से

किया हत एक

तू न पायेगा प्रतिष्ठा व्याध!

वर्ष अनेक ।

P.T.O.

वचन कह ऋषि के हृदय में
फिर हुआ परिताप,
दे दिया शोकार्त मैंने
आज कैसा शाप !

अथवा

कहलवाया है --
सिंलेटी पत्थर पर गेरु आदि से
करता हूँ तैयार आँक - आँक के
प्यार में रूठी हुई आकृति तुम्हारी
फिर मनाने के निमित्त
दिखाना चाहता हूँ अपने को उसी में ।
कि इतने में उमड़ आते हैं अपरिमित आँसू
लुप्त हो जाती है दृष्टि की क्षमता
कर सकता सहन नहीं निठुर विधाता
इस प्रकार भी हमारा मिलना-जुलना

(ख) ऐसो रामराइ अंतरजामी।
जैसे दरपन मांहि बदन परवानी।। रहाउ।।
बसै घटाघट लीपन छीपै। बंधान मुक्ता जात न दीसै ।।
पानी माहि देषु मुषु जैसा । नामे को सुआमी बीठलु ऐसाँ।।

अथवा

फिर ताजा कलम में महादेव लिखते हैं, "जिस जिन्दगी को बेकार समझकर तंग आ जाता था उसे अब 'वर्थ लिविंग' (जीने लायक) मानने जितनी श्रद्धा मेरे मन में जगी है । हालांकि बापू ने इतना सारा कहकर मुझे शरम में डाल दिया है । वह अब अपने बारे में मानने की शक्ति नहीं है । सिर्फ इतना है कि ऐसा सर्टिफिकेट मुझे जिन्दगी में न मिला है न कभी मिलेगा । भविष्य में किसी काम का में निमित्त बनूँ और जगत मेरी प्रशंसा करे, फिर भी इस अंतर के ये उदगार मेरे अंतर का जीवन भर का खजाना है ।

(ग) उस मृदु शरीरिणी बाला के स्निग्ध - पक्ष्मल नयनों में
सहसा संभ्रम फैल गया
मनोमंदिर में प्रतिष्ठित किया हुआ
दिव्य मंगल विग्रह बाहर कैसे आया।
आज तक जिस ईश्वर की उसने अराधना की थी
वही आज वरदान का आकांक्षी बनकर मानिनी के
सामने खड़ा है!

अथवा

मेरा निजी जीवन निष्कलंक रहा है । इसलिए सार्वजानिक जीवन में दिलचस्पी ली । नागरिक धर्म, देश-प्रेम, राष्ट्रीय एकता, भारतीकरण, समाजवाद, सबमें भाग रहा – पर मेरा कौन-सा समाज है ? मेरी क्या हस्ती है ? भागवतजी, मुझे कुछ न कुछ करना ही होगा । मुझे पूर्ण मनुष्य बनना है , पूर्णांग होना है । लेकिन यह सब कैसे होगा ? कैसे होगा ?

2. 'गाथा-सप्तशती में भावों की सरस अभिव्यंजना है'- इस कथन के आधार पर गाथा-सप्तशती का परिचय दीजिए। 15

अथवा

'संत कवि वेमना ने समाज की कुरीतियों पर कड़ा प्रहार किया है ' - पाठाधारित अंशों के आधार पर विवेचन कीजिए।

3. रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'भारत तीर्थ' कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीयता का विश्लेषण कीजिए। 15

अथवा

'सुब्रह्मण्यम भारती की 'स्वतंत्रता का गान' कविता नवजागरणकालीन चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति है'-स्पष्ट कीजिए।

4. शिवाजी सावंत कृत उपन्यास 'मृत्युंजय' के आधार पर 'कर्ण' का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15

अथवा

तकषी की 'खून का रिश्ता' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

(3)

15/5/18

This question paper contains 4 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper : 4438 HC

Unique Paper Code : 12051602

Name of Paper : Hindi Nibandh Aur Anya Gadya Vidhayein

Name of Course : B.A. (Hons.) Hindi : CBCS

Semester : VI

Duration : 3 hours

Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजस्व से भी आचरण सभ्यता अधिक ज्योतिष्मती है। आचरण की सभ्यता को प्राप्त करके एक कंगाल आदमी राजाओं के दिलों पर भी अपना प्रभुत्व जमा सकता है। इस सभ्यता के दर्शन से कला, साहित्य और संगीत को अद्‌भुत सिद्धि प्राप्त होती है। मनोराग अधिक मृदु हो जाता है, विद्या का तीसरा शिव-नेत्र खुल जाता है, चित्र-कला का मौन राग अलापने लग जाता है; वक्ता चुप हो जाता है; लेखक की लेखनी थम जाती है; मूर्ति बनाने वाले के सामने नये कपोल, नये नयन और नयी छवि का दृश्य उपस्थित हो जाता है।

अथवा

P. T. O.

दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुःखी वह है जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है, वही दूसरे के मन का छंदावर्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडंबर रचता है, दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वशी है। वह वैरागी है।

(ख) इन प्रमाणपत्रों से निराला को कोई तात्कालिक लाभ न हुआ, उन्हें किसी पत्रिका के संपादकीय विभाग में नौकरी न मिली। कलकत्ते की पोपुलर ट्रेडिंग कंपनी से बच्चों के लिए कुछ किताबें लिखने का आर्डर जरूर मिल गया। भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद और भीष्म पर उन्होंने तीन छोटी-छोटी पुस्तकें लिखीं। भक्त ध्रुव लिखते समय उन्हें कलकत्ते के हिन्दू-मुस्लिम दंगे याद आये। बच्चों में साम्प्रदायिकता के भाव न पनपें, इस विचार से पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा, "साथ ही, ईश्वर-प्राप्ति विषयक गूढ़ रहस्यों का उद्‌घाटन भी कर दिया गया है ताकि धर्म के मार्ग से घातक कट्टरता का इस देश से लोप हो जाए, बच्चे हर प्रान्त और हर जाति के बालकों से सहानुभूति रखना सीखें।"

अथवा

इतने दिनों से बिछुड़ने के बाद, मिलने पर, जो सबसे पहली चीज उसने मेरे हाथों पर रखी, वे थे रेशम और कुछ सूत

के अजीबोगरीब ढंग से लिपटे-लिपटाए डोरे, बद्धियां, गंडे आदि। यह सूरज देवता के हैं, यह अनंत देवता के, यह आम देवता के, यों ही गिनती-गिनती, आखिर में बोली—'ये हुसैन साहब के गंडे हैं, आपको मेरी ही कसम, इन्हें जरूर ही पहन लीजिएगा।' 8+7

2. 'मेले का ऊँट' निबंध सांस्कृतिक बदलाव को दर्शाता है, स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'लोभ और प्रीति' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

3. 'वैष्णव की फिसलन' निबंध में निहित व्यंग्य पर प्रकाश डालिये। 15

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' निबंध की भाषा-शैली पर विचार कीजिए। 15

4. जीवनी के तत्त्वों के आधार पर 'निराला की साहित्य साधना' की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'साहित्य की आत्मकथा विधा सत्य पर आश्रित होती है', पांडेय बेचन शर्मा उग्र जी की आत्मकथा 'अपनी खबर' के आधार पर विवेचन कीजिए। 15

5. पाठ्यक्रम में निर्धारित संस्मरण और रेखाचित्र के आधार पर दोनों साहित्यिक विधाओं का अंतर स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' यात्रा वृत्तांत की समीक्षा कीजिए। 15

(4)

This question paper contains 2 printed pages]

145/18

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : 4528

Unique Paper Code : 12057611 HC

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : B.A. (H) Hindi CBCS-DSE

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शब्द-शक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए व्यंजना के भेदों पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। 12

अथवा

अलंकार के स्वरूप पर विचार करते हुए रूपक अलंकार को उदाहरण सहित लिखिए।

2. रस के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए रस-निष्पत्ति की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। 12

अथवा

भारतीय काव्य-चिंतन में वर्णित काव्य लक्षणों पर विचार कीजिए।

3. स्वछंदतावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की चर्चा करते हुए उसकी विशेषताएँ लिखिए। 12

अथवा

आलोचनात्मक यथार्थवाद की मूल स्थापनाओं का विवेचन कीजिए।

4. त्रासदी का आशय स्पष्ट करते हुए उसके तत्वों का परिचय दीजिए। 12

अथवा

निबंध की परिभाषा देते हुए एक अच्छे निबंध की विशेषताएँ बताइये।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 3×9

(क) छंद;

(ख) उत्तर संरचनावाद;

(ग) गीतिकाव्य;

(घ) काव्य-हेतु;

(ङ) कहानी;

(च) समाजवादी यथार्थवाद।

[This question paper contains 2 printed pages.]

M/5/18

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1078 H

Unique Paper Code : 205601

Name of the Paper : रचनात्मक लेखन (प्रश्नपत्र-18)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : VI

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कविता की परिभाषा देते हुए इसकी संरचना को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

नाटक के तत्वों का विवेचन कीजिए।

2. कथा-साहित्य की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

गद्य-विधाओं में व्यंग्य की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

3. फिल्म-पटकथा लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

साक्षात्कार लेखन की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

4. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7=15)

(i) मौखिक और लिखित भाषा

(ii) प्रतीक और बिम्ब

(iii) अलंकरण

(iv) मानक भाषा

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7=15)

(i) साक्षात्कार

(ii) यात्र-वृत्तांत

(iii) लेखक-प्रकाशक सम्बन्ध

(iv) प्रूफ पठन

LIBRARY
27/5/18

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. ....

Sl. No. of Q. Paper : 1082 H

Unique Paper Code : 205605

Name of the Course : **B.A.(Hons.) Hindi**

Name of the Paper : MEDIA-I--अवधारणामूलक

Semester : VI

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जनसंचार की देते हुए उसके आर्थिक-सांस्कृतिक का विवेचन कीजिए। 15

अथवा

टी- वी- कार्यक्रम निर्माण एवं प्रसारण प्रक्रिया का उल्लेख कीजिए।

P.T.O.

2. पूर्व गाँधी युग की पत्रकारिता की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 15

अथवा

समकालीन हिंदी पत्रकारिता की चुनौतियों का मूल्याँकन कीजिए।

3. मुद्रण कला के विविध रूपों का परिचय दीजिए । 15

अथवा

दैनिक समाचार-पत्र में पृष्ठ सज्जा और ले आउट का महत्व स्पष्ट कीजिए ।

4. प्रसारण-प्रक्रिया के विविध आयामों का विश्लेषण कीजिए। 15

अथवा

प्रसार भारती की कार्यप्रणाली की विस्तृत समीक्षा कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 8,7

(क) फिल्म-निर्माण

(ख) व्यावसायिक पत्रकारिता

(ग) आचार-संहिता

(घ) केबल एक्ट